मधुमक्खियां और बारिश

चीन में नानचांग स्थित जिंगसी कृषि विश्वविद्यालय के ज़ु-जियांग हे और उनके साथियों का विचार है कि मधुमक्खियों को पता चल जाता है कि बारिश होने वाली है, इसलिए वे बारिश शुरू होने से पहले ज़्यादा काम करती हैं।

हे कि टीम ने किया यह कि उन्होंने तीन अलग-अलग छत्तों की 300 मज़दूर मधुमक्खियों पर रेडियो-फ्रीक्वेंसी बिल्ले लगा दिए ताकि उनकी दिन भर की गतिविधियों का रिकॉर्ड रखा जा सके। इन बिल्लों की मदद से यह रिकॉर्ड रखा गया कि रोज़ाना ये मधुमक्खियां छत्ते से कब निकलती हैं, कब तक बाहर रहती हैं और शाम को कब काम करना बंद कर देती हैं।

हे की टीम के आंकड़ों से पता चला कि मधुमक्खियों ने जिस दिन छत्ते से बाहर ज़्यादा समय बिताया, और दोपहर में देर से काम बंद किया, उसके अगले दिन बारिश हुई, धूप नहीं निकली। हे के मुताबिक ऐसा प्रतीत होता है कि ये मज़दूर मक्खियां हवा में नमी की मात्रा, तापमान और वायुमंडलीय दाब में परिवर्तनों को भांपकर प्रतिक्रिया दे रही हैं। ये सारे कारक बारिश से पहले बदलते हैं।

अलबत्ता, इलिनॉय विश्वविद्यालय के मधुमक्खी विशेषज्ञ जीन रॉबिंसन का कहना है कि यह निष्कर्ष आश्चर्यजनक है क्योंकि मधुमक्खियों को अतिरिक्त भोजन जुटाकर रखने की ज़रूरत नहीं होती। मधुमक्खियां रोज़ इकट्ठे किए गए भोजन पर निर्भर नहीं रहतीं, वे तो जमाखोर होती हैं। यानी भोजन जमा करके रखना उनके लिए एक नियमित गतिविधि है। इसलिए किसी दिन की परिस्थिति के अनुसार वे कम या ज़्यादा भोजन संग्रह करेंगी, यह संभव नहीं लगता।

चूंकि हे की टीम ने मधुमक्खियों का रिकॉर्ड मात्र 34 दिन के लिए रखा था, इसलिए संभव है कि सक्रियता में अंतर का सम्बंध सिर्फ फूल खिलने वगैरह के समय से हो। अलबत्ता, यदि हे की टीम के निष्कर्ष सही हुए तो मधुमक्खियों पर जलवायु परिवर्तन तथा मानव क्रियाकलापों के असर से निपटने की दिशा में कुछ प्रगति हो सकती है। गौरतलब है कि मधुमक्खियां हमारी कई फसलों के लिए महत्वपूर्ण परागणकर्ता हैं। ***(स्रोत फीचर्स)***